RAMAYAN
RESEARCH COUNCIL

जय श्री राम

प्रभु श्रीरामलला मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा दिवस को जीवंत रखने हेतु
मा. प्रधानमंत्री जी को प्रस्तुत किया जाने वाला 11,111 पृष्ठों का
संकलित धन्यवाद पत्र-ग्रंथ

अ लेटर टू नरेंद्र मोदी

रामायण रिसर्च काउंसिल

'रामायण रिसर्च काउंसिल'

'अ लेटर टू नरेंद्र मोदी' क्यों ?

सैकड़ों वर्षों का संघर्ष, सत्य-पथ पर श्रीराम-नाम रूपी आंदोलन की आग को जलाए रखने की वीरता और हमारे सनातन के संयम का फल है कि 22 जनवरी 2024 को श्रीरामलला की जन्मभूमि अयोध्या में हमारे आराध्य प्रभु श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा को हम अपनी आंखों के सामने होते देख पाए। यह मंदिर इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह करोड़ों सनातनियों की आस्था का केंद्र है, इसलिए तो लाखों राम-भक्तों ने संघर्ष के क्रम में अपने प्राणों की आहुति दे दी।

500 वर्षों के मंदिर संघर्ष में कितने कालखण्ड आए, विदेशी आक्रांता आए,अंग्रेज़ी शासन आए, स्वतंत्रता के बाद कई सरकारें आईं, कई प्रधानमंत्रियों के शासनकाल आए, लेकिन अंततः जिस प्रधानमंत्रित्व-काल में यह विषय साकार रूप में प्रतीत हुआ, वह श्रीमान नरेंद्र मोदी जी की वर्तमान सरकार है इसलिए देश की संस्कृति और प्रभु श्रीराम के आदर्शों पर कार्य कर रही संस्था'रामायण रिसर्च काउंसिल' आ. नरेंद्र मोदी जी के प्रति आभार और हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करती है।

रामायण रिसर्च काउंसिल, अयोध्या में श्रीराम मंदिर एवं इसके संघर्ष पर वर्ष 2018 से ही कार्य करती रही है। श्रीराम मंदिर संघर्ष पर आधारित, एक ग्रंथ 'श्रीरामलला- मन से मंदिर तक' को भी काउंसिल ने एक वृहद शोध-ग्रंथ के रूप में तैयार किया है। माननीय प्रधानमंत्री जी का विशेष धन्यवाद, जिन्होंने इस ग्रंथ के लेखन-कार्य के दौरान वर्ष 2021 में काउंसिल के बोर्ड ऑफ ट्रस्टी के अध्यक्ष श्री अजय भट्ट (वर्तमान सांसद) तथा काउंसिल के महासचिव श्री कुमार सुशांत को समय देकर इस विषय को अच्छी तरह समझा और अपना अमूल्य मार्गदर्शन भी प्रदान किया। उन्हीं से मिली प्रेरणा का परिणाम है कि यह ग्रंथ अब हिन्दी भाषा में पूर्ण हो चुका है तथा हिन्दी के अलावा कई अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में इसका अनुवाद भी किया जा रहा है। ग्रंथ 1200 से अधिक पृष्ठों का है। मा. प्रधानमंत्री जी को इस ग्रंथ के पूर्ण होने की सूचना भी प्रेषित की गई है। साथ ही, काउंसिल 'अ लेटर टू नरेंद्र मोदी' के विषय को साकार रूप देने के प्रति प्रतिबद्ध है, लेकिन हम 'अ लेटर टू नरेंद्र मोदी' पर कार्य क्यों कर रहे हैं, यह समझना बहुत आवश्यक है।

22 जनवरी 2024 के उस प्राण-प्रतिष्ठा वाले क्षण और उस दिन को जब हम याद करते हैं तो आज भी प्रतीत होता है कि जैसे कोई स्वप्न देख रहे हों। वो दिन ऐसा था, मानो राम-राज्य आ गया हो। पूरा देश नहीं, विश्व राममय था। रामभक्ति में सब सराबोर थे। हम सबने भगवान श्रीरामलला के जन्म-स्थान पर संघर्ष की कहानी को बचपन में अपने-अपने बड़े-बुजुर्गों से सुना था और वे बड़े-बुजुर्ग बताते थे कि उन्होंने भी अपने पूर्वजों से इसी गाथा को सुन रखा था। हमारे आराध्य प्रभु के जन्म-स्थान अयोध्या में मंदिर के लिए सैंकड़ों वर्षों के संघर्ष पर अब जाकर विराम लगेगा, यह हम सबके कल्पना से परे था। हम अपनी नम आंखों से देख पाएंगे, यह सोचा न था। हम यह सोचते और लिखते हुए आज भी भाव-विह्वल हो जाते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी, काउंसिल परिवार ही नहीं, हर सनातनी के चिंतन में होगा कि जिस समय आप प्राण-प्रतिष्ठा के लिए अयोध्या परिसर में गर्भ-गृह की ओर बढ़ रहे थे तो करोड़ों सनातनियों का हृदय धड़क रहा था। जैसे ही प्राण-प्रतिष्ठा का समय हुआ, शंख बजा, लगा पूरा विश्व गूंज उठा। जो जहां जिस तरह टीवी-स्क्रीन के सामने, पूजा पर, या मंदिर के सामने

था, वहीं तुरंत उठ खड़ा हुआ। आंखें नम हो गईं। कई तो चिघाड़ कर रोने लगे। ये वो चिघाड़ थी, जिसके पीछे हमारे आराध्य प्रभु के लिए उनके बेघर रहने का एक दर्द था और अब उनके लिए मंदिर निर्माण की खुशी थी। पूरा देश अपने भगवान का उनके नए घर में स्वागत करने लगे। जय श्री राम के गूंज से विश्व गूंज उठा। गली-मोहल्ला-सड़क-चौराहा-बाज़ार समेत हर घर में एक अलग रौनक थी। शाम में हर घर में दीपावली मनाई गई। सबने अपने-अपने स्थान से भगवान का उनके घर में आने का स्वागत किया।

हम सनातन में प्रारब्ध को मानते हैं। इसका तात्पर्य है कि नियति एवं विधाता सबके पूर्व कर्मों के हिसाब से सब निर्धारित कर रखा होता है। मा. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों श्रीरामलला की अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा हुई। नियति ने यह सैंकड़ों वर्ष पहले ही तय कर रखा था कि उन्हीं के हाथों प्राण-प्रतिष्ठा होनी है। निस्संदेह, उन पर भगवान की असीम कृपा है। इस क्षण को गौरवशाली बनाने के लिए उनके नेतृत्व में जो कार्य हुए, पूरा सनातन परिवार इसकी जितनी प्रशंसा करे, कम है।ये रामलला के बाल-रूप विग्रह-मात्र का ही प्राण-प्रतिष्ठा-कार्यक्रम नहीं था, अपितु भारत और महान भारतीय संस्कृति की अस्मिता, उसके स्वाभिमान और गौरव की पुनर्स्थापना का अतुलनीय दिवस था। ईश्वरीय विधान ही है कि हमारे आराध्य श्रीराघवजी ने इसके लिए मा. प्रधानमंत्री जैसे एक ऐसे तपस्वी भक्त का चयन किया। यह संदेह से परे होगा कि यह कृपा जिन पर भी होती, वह आधुनिक भारत की सांस्कृतिक पुनर्चेतना का निर्विवाद अग्रदूत ही होते, उनके व्यक्तित्व में समर्थ शासक, विलक्षण प्रशासक और निरभिमानी उपासक निरन्तर दृष्टिगोचर ही रहते। हमें गर्व कि वह कृपा श्री नरेंद्र मोदी जी पर हुई है। प्राण-प्रतिष्ठा के दिन पूज्य श्री गोविंद गिरि जी महाराज ने पंचामृत से प्रधान सेवक (मा. प्रधानमंत्री जी) का 11 दिनों के महाअनुष्ठान का व्रत सम्पन्न करवाया तो ऐसा प्रतीत हुआ, मानो वे भारतवर्ष की इस पावन धरा के इस पुण्यात्मा पुत्र के उपवास की पूर्णाहुति में सम्पूर्ण सत्पुरुषों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। यही कारण है कि हम माननीय प्रधानमंत्री जी के नाम से ही इन धन्यवाद-पत्रों को लिखने हेतु आमंत्रण दे रहे हैं। यही कारण है कि श्री नरेंद्र मोदी जी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में हुई प्राण-प्रतिष्ठा के दिवस को हम जीवंत बनाना चाहते हैं।

अयोध्या का प्रभु श्रीराम का मंदिर राष्ट्र-मंदिर है। प्रभु श्रीराम राष्ट्र की संस्कृति हैं। श्रीराम राष्ट्र के प्राण हैं। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने एक बार संसद में कहा था कि श्रीराम मंदिर का निर्माण राष्ट्रीय स्वाभिमान का मुद्दा है। श्रीरामलला के मंदिर का निर्माण का अर्थ 'भारत का नवनिर्माण' है। अयोध्या में यह भव्य श्रीरामलला का मंदिर हमारे लिए सौभाग्य का प्रतीक भी लेकर आया है। इस कालखण्ड से एक नए भारत की परिकल्पना को हम देख पा रहे हैं, जहां हिन्दुत्व का स्थान निर्णायक भूमिका में है। आज सनातन समाज एकजुट हो रहा है। वर्षों बाद आज का भारत अपने खोये हुए गौरव के प्रकाश को देख रहा है। अतीत के हर दंश से मुक्ति पाता हुआ नए इतिहास का सृजन कर रहा है। आज से हजार वर्ष बाद भी लोग 22 जनवरी 2024 की तारीख को याद करेंगे, तब आज के इस पल की चर्चा करते नहीं थकेंगे। जिन-जिन प्रयासों के बल पर श्रीरामलला अपने मंदिर में विराजमान हो पाए और हमें इस स्वर्णिम, अद्भुत एवं अविस्मरणीय क्षण को जीने का अवसर दिया, उन्हें हम कोटि-कोटि आत्मीय अभिनन्दन करते हैं।

अयोध्या धाम में श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का अलौकिक क्षण हर किसी को भाव-विभोर करने वाला है। इसे अपने शरीर में रहते देख पाना, हम सबका परम सौभाग्य है। लेकिन चिंता है, ये पल कहीं खो न जाए। समय के लिए इसे भुला न दिया जाए। यह चिंता इसलिए है, क्योंकि जिस इंटरनेट और सर्च इंजन पर हमारी सारी जानकारी टिकी है, वह समय के साथ पुरानी सामग्रियों को बहुत पीछे करता है। हम आज से 100 वर्ष पुराने विषय को तलाशें, तो मुश्किल होगा। उसी तरह आज से 100 वर्ष बाद क्या होगा ? उस समय सारे टीवी चैनल्स, मीडिया-रिपोर्ट्स भी बमुश्किल ही मिलेंगी। नए विषय ट्रेंड्स में होंगे। पुस्तकें और कुछ दस्तावेज ही होंगे जो कई दशकों पहले हुई घटनाओं का वर्णन करेंगे। कई बार हमने राजनीतिक घटनाक्रमों के चलते कलम को भी गिरवी होते देखा है। ऐसे तथ्यों और कड़वे विचारों को ध्यान में रहते हुए ही हमने प्रभु श्रीरामलला के जन्म-स्थान पर मंदिर के संघर्षों की गाथा को ग्रंथ 'श्रीरामलला- मन से मंदिर तक' में संकलित किया है और अब 22 जनवरी 2024 को श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के दिवस को इस ब्रम्हाण्ड के मानस पटल पर जीवंत रखने की दृष्टि से ही इस विषय की संकल्पना तैयार की है और मा. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नाम 11,111 धन्यवाद-पत्रों का समायोजन, संकलन और इसे पत्र-ग्रंथ का स्वरूप देकर 'अ लेटर टू नरेंद्र मोदी' के नाम से तैयार करने का संकल्प लिया है।

इस शरीर का नष्ट होना तय है
ऐसे रामकाज में हमारा नाम हमें जीवंत रखता है।

पत्र लिखते समय आपको ध्यान रखना है-

'अ लेटर टू नरेंद्र मोदी', 22 जनवरी 2024 को श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के शुभ अवसर को सदैव संस्मरण में याद रखने के दृष्टिकोण से तैयार किया जा रहा है। अतः इस दिवस से जुड़ा कोई संस्मरण, उस दिवस का कोई दृश्य जो आपको भावुक करता हो, श्रीराम मंदिर का महत्त्व आपकी दृष्टि में, श्रीराम मंदिर के संघर्ष, निर्माण या इससे संबंधित किसी अभियान में आपके द्वारा किया गया कोई अनुपम कार्य हो, आप 22 जनवरी 2024 को प्राण-प्रतिष्ठा के दिवस को किस रूप में देखते हैं, या इस विषय से जुड़ा कोई तथ्यात्मक संस्मरण तथा मा. प्रधानमंत्री जी के प्रति आभार एवं धन्यवादपूर्ण आशय, जो भी आपके भाव हों, ऐसे विचारों को सकारात्मक, अलंकृत और भावपूर्ण शब्दों में लिखा जा सकता है।

जानकारी में रहे

धन्यवाद-पत्रों के चयन के लिए बनी है दो समितियां

पत्रों के चयन के लिए काउंसिल द्वारा दो विभिन्न समितियां गठित की गई है। 5-5 सदस्यों की दोनों समितियां के कार्य भिन्न हैं। प्रारंभिक स्तर पर पत्रों के चयन के बाद प्रथम समिति के पास पत्रों को भेजा जाएगा। प्रथम समिति की ओर से पत्रों के चयन के बाद दूसरी समिति के पास ये पत्र अग्रसारित होंगे। दूसरी समिति की ओर से संस्तुति के बाद ही संबंधित पत्रों को प्रकाशन हेतु अग्रसारित किया जाएगा।

वीडियो बाइट के द्वारा भी दे सकते हैं विचार

अगर आप वीडियो के माध्यम से अपना विचार व्यक्त करना चाहेंगे तो उन वीडियोज़ को हम AI के माध्यम से टेक्स्ट फॉर्मेट में कन्वर्ट कर आपके द्वारा व्यक्त विचार को पत्र के रूप में तैयार करेंगे तथा चयन के बाद उसे प्रकाशित भी करेंगे।

डिजिटल माध्यम पर भी होगा अपलोड

आगे चलकर सारे पत्रों को हम www.alettertonarendramodi.com पर भी अपलोड करेंगे, ताकि सार्वजनिक रूप से भी उन धन्यवाद-पत्रों को, जो प्रकाशन हेतु चयनित होंगे, पढ़ा जा सके।

पत्र में शब्दों की संख्या

पत्र में सामान्यतया शब्दों की सीमा 1,000 रखी गई है, लेकिन विशेष परिस्थिति में कार्य, अनुभव एवं पत्रों की गुणवत्ता के आधार पर यह अधिक भी हो सकता है।

पत्र लिखने के बाद कैसे भेजें

आप अपने लिखे गए पत्र को ई-मेल – alettertonarendramodi@gmail.com पर भेज सकते हैं।

मीडिया कवरेज

THU, 13 FEBRUARY 2025
EDITION: HISAR KESARI, PAGE NO. 3

रामायण रिसर्च काउंसिल ए लेटर टू नरेंद्र मोदी नामक ग्रंथ तैयार कर रही है: कुमार सुशांत

विभिन्न क्षेत्रों के 11,111 अनुभवी लोगों के धन्यवाद पत्रों का संग्रह होगा

[illegible]

कुमार सुशांत।

[illegible]

श्री राम मंदिर संघर्ष पर ग्रंथ लिख चुकी है काउंसिल

[illegible]

माता सीताजी की भव्य प्रतिमा

[illegible]

नवोदय टाइम्स

गुरुग्राम संस्करण 12.02.2025

पीएम के नाम धन्यवाद-पत्रों का संग्रह कर रही काउंसिल

गुड़गांव, 11 फरवरी (ब्यूरो): वर्ष 2022 में अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के दिन राममय क्षण को सदैव जीवंत रखने के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल एक पहल कर रही है।

काउंसिल देश में विभिन्न क्षेत्र के लोगों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम एक धन्यवाद-पत्र लिखवा रही है और उन पत्रों को संकलित कर एक ग्रंथ तैयार कर रही है। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि 'ए लेटर टू नरेंद्र मोदी' नाम के इस ग्रंथ में नरेंद्र मोदी के नाम 11,111 धन्यवाद पत्रों को संकलित करने का संकल्प है। कुमार सुशांत ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ही नाम इस धन्यवाद-पत्र को इसलिए लिखवाया जा रहा है क्योंकि उनके नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट में रामलला के पक्ष को मजबूती के साथ रखा गया, उन्हीं के हाथों मंदिर का भूमि-पूजन हुआ और प्राण-प्रतिष्ठा भी की गई। 22 जनवरी 2022 का वो क्षण अद्वितीय था, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो रामराज्य आ गया हो।

उन्होंने जोर देकर कहा कि ये पल इस प्रकृति में सदैव जीवंत रहें, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से उनके भाव-स्वरूप पत्रों का यह संकलन तैयार किया जा रहा है।

सुशांत ने कहा कि इन पत्रों की विशेषता होगी कि इसमें एक रिक्शा चलाने वाले एवं मजदूर वर्ग के लोगों से लेकर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ब्यूरोक्रेट, कला, खेल एवं कॉरपोरेट जगत तक से संपर्क कर पीएम नरेंद्र मोदी के नाम धन्यवाद-पत्र लिखवाए जा रहे हैं।

पंजाब केसरी

दिल्ली संस्करण- 14.02.2025

पीएम के नाम धन्यवाद-पत्रों का हो रहा संग्रह

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): वर्ष-2024 में अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के दिन राममय क्षण को सदैव जीवंत रखने के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल एक पहल कर रही है। काउंसिल देश में विभिन्न क्षेत्र के लोगों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम एक धन्यवाद-पत्र लिखवा रही है और उन पत्रों को संकलित कर एक ग्रंथ तैयार कर रही है। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि 'ए लेटर टू नरेंद्र मोदी" नाम के इस ग्रंथ मे नरेंद्र मोदी के नाम 11,111 धन्यवाद पत्रों को संकलित करने का संकल्प है। कुमार सुशांत ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम इस धन्यवाद-पत्र को इसलिए लिखवाया जा रहा है क्योंकि उनके नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट में रामलला के पक्ष को मजबूती के साथ रखा गया, उन्हीं के हाथों मंदिर का भूमि-पूजन हुआ और प्राण-प्रतिष्ठा भी की गई। उन्होंने कहा कि 22 जनवरी 2024 का वो क्षण अद्वितीय था, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो रामराज्य आ गया हो। सुशांत ने बताया कि रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के दूसरी वर्षगांठ यानी 22 जनवरी 2026 तक धन्यवाद-पत्र के संकलन-कार्य को पूरा करने की योजना है। उन्होंने कहा कि इसके पूरा होते ही काउंसिल का एक प्रतिनिधिमंडल प्रधानमंत्री कार्यालय को संपर्क कर पीएम को आभार स्वरूप यह ग्रंथ भेंट करेंगे। साथ ही प्रधानमंत्री संग्रहालय में इस कृति को रखवाने के साथ देश के प्रमुख संग्रहालयों में भी इसे रखवाने के लिए प्रयत्न करेंगे।

NBT नवभारत टाइम्स

DELHI EDITION - 11.02.2025

संकलित होगा ग्रंथ 'ए लेटर टु नरेंद्र मोदी'

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्लीः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम रामायण रिसर्च काउंसिल देश के विभिन्न क्षेत्र के लोगों से धन्यवाद पत्र लिखवा रही है। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि पत्रों को संकलित कर एक ग्रंथ 'ए लेटर टु नरेंद्र मोदी' तैयार किया जा रहा है।

पीएम के नाम 11,111 धन्यवाद पत्रों को संकलित किए जाएंगे। पत्र में लिखवाया जा रहा है कि उनके नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट में रामलला के पक्ष को मजबूती के साथ रखा गया, उन्हीं के हाथों भव्य राम मंदिर के शिलान्यास के लिए भूमि पूजन हुआ और बाद में उनके द्वारा 22 जनवरी, 2024 को भव्य राम मंदिर में भगवान राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा भी की गई। सुशांत ने कहा कि इन पत्रों को लिखने वालों में रिक्शा चलाने वाले, मजदूर वर्ग के लोगों से लेकर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ब्यूरोक्रेट, कला, खेल और कॉरपोरेट जगत तक के सभी लोग होंगे।

हि हिन्दुस्तान

नई दिल्ली संस्करण 12.02.2025

मोदी के नाम धन्यवाद पत्र लिखवा रहे

नई दिल्ली। अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा के दिन राममय क्षण को सदैव जीवंत रखने के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल एक पहल कर रही है। महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि देशभर में लोगों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम एक धन्यवाद-पत्र लिखवाए जा रहे हैं। 'ए लेटर टू नरेंद्र मोदी' नाम के इस ग्रंथ में नरेंद्र मोदी के नाम 11,111 धन्यवाद पत्रों को संकलित करने का संकल्प है।

मीडिया कवरेज

दैनिक भास्कर

गुरुग्राम संस्करण 12.02.2025

पीएम के नाम धन्यवाद-पत्रों का संग्रह कर रही काउंसिल

गुड़गांव, 11 फरवरी (ब्यूरो): वर्ष 2022 में अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के दिन राममय क्षण को सदैव जीवंत रखने के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल एक पहल कर रही है।

काउंसिल देश में विभिन्न क्षेत्र के लोगों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम एक धन्यवाद-पत्र लिखवा रही है और उन पत्रों को संकलित कर एक ग्रंथ तैयार कर रही है। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि 'ए लेटर टू नरेंद्र मोदी' नाम के इस ग्रंथ में नरेंद्र मोदी के नाम 11,111 धन्यवाद पत्रों को संकलित करने का संकल्प है। कुमार सुशांत ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ही नाम इस धन्यवाद-पत्र को इसलिए लिखवाया जा रहा है क्योंकि उनके नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट में रामलला के पक्ष को मजबूती के साथ रखा गया, उन्हीं के हाथों मंदिर का भूमि-पूजन हुआ और प्राण-प्रतिष्ठा भी की गई। 22 जनवरी 2022 का वो क्षण अद्वितीय था, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो रामराज्य आ गया हो।

उन्होंने जोर देकर कहा कि ये पल इस प्रकृति में सदैव जीवंत रहें, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से उनके भाव-स्वरूप पत्रों का यह संकलन तैयार किया जा रहा है।

सुशांत ने कहा कि इन पत्रों की विशेषता होगी कि इसमें एक रिक्शा चलाने वाले एवं मजदूर वर्ग के लोगों से लेकर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ब्यूरोक्रेट, कला, खेल एवं कॉरपोरेट जगत तक से संपर्क कर पीएम नरेंद्र मोदी के नाम धन्यवाद-पत्र लिखवाए जा रहे हैं।

दैनिक जागरण

दिल्ली-एनसीआर संस्करण - 15.02.2025 - पेज नं. 15

ग्रंथ में अमर होंगे रामलला विग्रह के प्राण प्रतिष्ठा के जीवंत सनातनी भाव

नेमिष हेमंत • जागरण

नई दिल्ली : 500 वर्षों के संघर्ष व इंतजार के बाद जब अयोध्या स्थित भव्य मंदिर में रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हुई तब विश्वभर के सनातनी भाव विह्वल थे। 22 जनवरी 2024 को उक्त ऐतिहासिक दिन श्रद्धा व भक्ति का ऐसा महासागर उमड़ आया था, जो न पहले कभी देखा गया, न देखे जाने की आशा है। उन राममय सनातन भावों को अब पत्रों के माध्यम से संकलन का काम चल रहा है, जो ग्रंथ के रूप में अजर-अमर होगा। जो पढ़ेगा, उसके लिए वह महादृश्य फिर उभरकर ठहर जाएंगे।

प्राण-प्रतिष्ठा के दिन राममय क्षण को सदैव जीवंत रखने के लिए यह अनूठी पहल रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा की जा रही है। इसके लिए देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्र से जुड़े उन लोगों से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम धन्यवाद पत्र लिखवाए जा रहे हैं, जिन्होंने मंदिर के निर्माण या माहौल को राममय बनाने में विशेष योगदान दिया था।

काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत के अनुसार, 22 जनवरी 2024 का वो क्षण अद्वितीय था, ऐसा प्रतीत

पीएम के नाम 11,111 भावपूर्ण पत्रों को संकलित कर रामायण काउंसिल द्वारा ग्रंथ आकार देने की तैयारी, चलेगा पत्र संकलन अभियान

हो रहा था मानो रामराज्य आ गया हो। यह पल इस प्रकृति में सदैव जीवंत रहे, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर यह अभियान शुरू हुआ है, जिसमें 'ए लेटर टू नरेन्द्र मोदी' नाम के इस ग्रंथ में 11,111 धन्यवाद पत्रों को संकलित करने का संकल्प लिया गया है, जिसमें रिक्शा चलाने वाले व मजदूर वर्ग से लेकर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ब्यूरोक्रेट, कला, खेल व कारपोरेट जगत तथा विदेश में रहते हिंदुओं के भी भाव संकलित होंगे। उनके अनुसार, पूर्ण होने के बाद इस ग्रंथ को प्रधानमंत्री को भेंट किया जाएगा।

अमर उजाला

दिल्ली संस्करण - 13.02.2025

प्रधानमंत्री के नाम धन्यवाद-पत्रग्रंथ

नई दिल्ली। रामायण रिसर्च काउंसिल की ओर से प्राण-प्रतिष्ठा के राममय क्षण को हमेशा जीवित रखने के लिए एक पहल की जा रही है। देश में विभिन्न क्षेत्र के लोगों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम एक धन्यवाद-पत्र लिखवा रही है, जिनको संकलित कर एक ग्रंथ तैयार किया जाएगा। 'ए लेटर टू नरेंद्र मोदी' नामक ग्रंथ प्रधानमंत्री को प्राण-प्रतिष्ठा की दूसरी वर्षगांठ पर भेंट करने की योजना है। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि इस ग्रंथ में नरेंद्र मोदी के नाम 11,111 धन्यवाद पत्रों को संकलित करने का संकल्प किया गया है। ब्यूरो

राष्ट्रीय सहारा

दिल्ली संस्करण - 14.02.2025

पीएम के नाम धन्यवाद-पत्रों को संग्रह कर रही रामायण रिसर्च काउंसिल

नई दिल्ली (एसएनबी)। अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के दिन राममय क्षण को सदैव जीवंत रखने के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल एक पहल कर रही है। काउंसिल देश में विभिन्न क्षेत्र के लोगों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम एक धन्यवाद-पत्र लिखवा रही है और उन पत्रों को संकलित कर एक ग्रंथ तैयार कर रही है। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि 'ए लेटर टू नरेंद्र मोदी' नाम के इस ग्रंथ में नरेंद्र मोदी के नाम 11,111 धन्यवाद पत्रों को संकलित करने का संकल्प है।

- नाम होगा 'अ लेटर टू नरेंद्र मोदी'
- 11,111 पत्रों को संकलित कर एक ग्रंथ को तैयार किया जाएगा

कुमार सुशांत ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ही नाम इस धन्यवाद-पत्र को इसलिए लिखवाया जा रहा है क्योंकि उनके नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट में रामलला के पक्ष को मजबूती के साथ रखा गया, उन्हीं के हाथों मंदिर का भूमि-पूजन हुआ और प्राण-प्रतिष्ठा भी की गई। उन्होंने कहा कि 22 जनवरी 2024 का वो क्षण अद्वितीय था, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो रामराज्य आ गया हो। उन्होंने जोर देकर कहा कि ये पल इस प्रकृति में सदैव जीवंत रहें, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से उनके भाव-स्वरूप पत्रों का यह संकलन तैयार किया जा रहा है। सुशांत ने कहा कि इन पत्रों की विशेषता होगी कि इसमें मजदूर वर्ग के लोगों से लेकर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ब्यूरोक्रेट, कला, खेल एवं कॉरपोरेट जगत तक से संपर्क कर पीएम नरेंद्र मोदी के नाम धन्यवाद-पत्र लिखवाए जा रहे हैं।

सुशांत ने बताया कि रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के दूसरी वर्षगांठ यानी 22 जनवरी 2026 तक धन्यवाद-पत्र के संकलन-कार्य को पूर्ण करने की योजना है। इसके पूरा होते ही काउंसिल का एक प्रतिनिधिमंडल प्रधानमंत्री कार्यालय को संपर्क कर पीएम को आभार-स्वरूप यह ग्रंथ भेंट करेंगे। साथ ही प्रधानमंत्री संग्रहालय में इस कृति को रखवाने के साथ देश के प्रमुख संग्रहालयों में भी इसे रखवाने के लिए प्रयत्न करेंगे।

दैनिक जागरण

राष्ट्रीय संस्करण 12.02.2025

महादृश्य

पीएम के नाम 11,111 भावपूर्ण पत्रों को संकलित कर रामायण काउंसिल की ओर से ग्रंथ बनाया जाएगा, अगले वर्ष प्राण प्रतिष्ठा दिवस तक देश-विदेश में चलेगा पत्र संकलन अभियान, पीएम को की जाएगी भेंट

पीएम के नाम पत्रों को संकलित कर ग्रंथ आकार देने की तैयारी

नेमिष हेमंत • जागरण

नई दिल्ली : 500 वर्षों के संघर्ष व इंतजार के बाद जब अयोध्या स्थित भव्य मंदिर में रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हुई, तब विश्वभर के सनातनी भाव विह्वल थे। 22 जनवरी 2024 को उस ऐतिहासिक दिन श्रद्धा व भक्ति का ऐसा महासागर उमड़ आया था, जो न पहले कभी देखा गया, न देखे जाने की आशा है। उन राममय सनातन भावों को अब पत्रों के माध्यम से संकलन का काम चल रहा है, जो ग्रंथ के रूप में अजर-अमर होगा। जो पढ़ेगा, उसके लिए वह महादृश्य फिर उभरकर ठहर जाएंगे।

प्राण-प्रतिष्ठा के दिन राममय क्षण को सदैव जीवंत रखने के लिए यह अनूठी पहल रामायण रिसर्च काउंसिल की ओर से जा रही है। इसके लिए देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्र से जुड़े उन लोगों से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम धन्यवाद पत्र लिखवाए जा रहे हैं, जिन्होंने मंदिर के निर्माण या माहौल

पीएम नरेन्द्र मोदी। फाइल

को राममय बनाने में विशेष योगदान दिया था। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत के अनुसार 22 जनवरी 2024 का वो क्षण अद्वितीय था, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो रामराज्य आ गया हो। यह पल इस प्रकृति में सदैव जीवंत रहे, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर यह अभियान शुरू हुआ है, जिसमें 'ए लेटर टू नरेंद्र मोदी' नाम के इस ग्रंथ में 11,111 धन्यवाद पत्रों को संकलित करने का संकल्प लिया गया है, जिसमें रिक्शा चलाने वाले व मजदूर वर्ग से लेकर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ब्यूरोक्रेट, कला, खेल व कारपोरेट जगत तथा विदेश में र हिंदुओं के भी भाव संकलित होंगे।

उनके अनुसार, पूर्ण होने के बाद इस को प्रधानमंत्री को भेंट किया जाएगा। प्रय होगा कि यह ग्रंथ प्रधानमंत्री संग्रहालय साथ ही अन्य संग्रहालयों में रखा जाए, ता जो उस ऐतिहासिक दिन के भाव को मह करना चाहे वह उससे कर सके। सुशांत अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल उनके प्रयासों से सुप्रीम कोर्ट से रामल स्थल का कानूनी हल निकला। उ के हाथों मंदिर का भूमि-पूजन हुआ रामलला के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा की इसलिए यह पत्र पीएम के नाम लिखवाए रहे हैं। अभी यह प्रयास प्रारंभिक चरण कुछ पत्र आए हैं। इसे अगले वर्ष तक करने का लक्ष्य है। मंगलवार को काउंसि की बैठक में तय हुआ कि प्रत्येक राज्य इसके लिए प्रतिनिधि तय किए जाएंगे, पात्र लोगों का भाव पत्र संग्रहित करेंगे। काम विभिन्न देशों में भी होगा।

श्रीमंदिर संघर्ष पर ग्रंथ लिख चुकी है काउंसिल

रामायण रिसर्च काउंसिल ने ही अयोध्या में राम मंदिर के 500 वर्षों के संघर्ष पर 1108 पृष्ठ का एक ग्रंथ 'श्रीरामलला- मन से मंदिर तक' को तैयार किया है। यह ग्रंथ हिंदी में पूर्ण हो चुका है, 10 अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में भी इसके अनुवाद का संकल्प है। सुशांत ने बताया कि हिन्दी भाषा में इस ग्रंथ के विमोचन की तैयारी भी चल रही है, जिसके लेखन के दौरान प्रधानमंत्री मोदी का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ था।

नवोदय टाइम्स

गुरुग्राम संस्करण 12.02.2025

पीएम के नाम धन्यवाद-पत्रों का संग्रह कर रही काउंसिल

गुड़गांव, 11 फरवरी (ब्यूरो): वर्ष 2022 में अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के दिन राममय क्षण को सदैव जीवंत रखने के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल एक पहल कर रही है।

काउंसिल देश में विभिन्न क्षेत्र के लोगों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम एक धन्यवाद-पत्र लिखवा रही है और उन पत्रों को संकलित कर एक ग्रंथ तैयार कर रही है। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि 'ए लेटर टू नरेंद्र मोदी' नाम के इस ग्रंथ में नरेंद्र मोदी के नाम 11,111 धन्यवाद पत्रों को संकलित करने का संकल्प है। कुमार सुशांत ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ही नाम इस धन्यवाद-पत्र को इसलिए लिखवाया जा रहा है क्योंकि उनके नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट में रामलला के पक्ष को मजबूती के साथ रखा गया, उन्हीं के हाथों मंदिर का भूमि-पूजन हुआ और प्राण-प्रतिष्ठा भी की गई। 22 जनवरी 2022 का वो क्षण अद्वितीय था, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो रामराज्य आ गया हो।

उन्होंने जोर देकर कहा कि ये पल इस प्रकृति में सदैव जीवंत रहें, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से उनके भाव-स्वरूप पत्रों का यह संकलन तैयार किया जा रहा है।

सुशांत ने कहा कि इन पत्रों की विशेषता होगी कि इसमें एक रिक्शा चलाने वाले एवं मजदूर वर्ग के लोगों से लेकर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ब्यूरोक्रेट, कला, खेल एवं कॉरपोरेट जगत तक से संपर्क कर पीएम नरेंद्र मोदी के नाम धन्यवाद-पत्र लिखवाए जा रहे हैं।

7 गुड़गांव केसरी

रामायण रिसर्च काउंसिल 'ए लेटर टू नरेंद्र मोदी' नामक एक ग्रंथ तैयार कर रही है

'अ लेटर टू नरेंद्र मोदी' से पहले 'रामायण रिसर्च काउंसिल' के कार्यों के विषय में जानिए-

प्रभु श्रीराम मंदिर के लिए 500 वर्षों के संघर्ष तथा भगवान के मानव-कल्याण संदेशों पर आधारित ग्रंथ

श्रीरामलला: मन से मंदिर तक

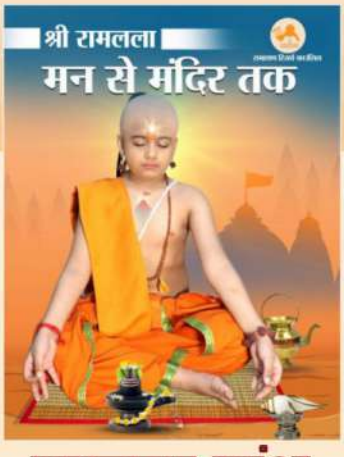

पुस्तक ग्रंथ

पहली बार एक विषय अयोध्या और प्रभु श्रीरामजी पर किसी एक संकलित विषय में 250 से अधिक लेखकों के विचार संकलित किए गए हैं। अयोध्या के सांस्कृतिक,ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, कानूनी, आध्यात्मिक, विकास से संबंधित सारे बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए इसमें विषय संकलित किए गए हैं। यह आने वाली पीढ़ी लिए शोध का विषय बने, इसके लिए प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष के अलावा यह राष्ट्र मंदिर कैसे है और प्रभु के मानव कल्याण संदेश क्या हैं, माता जानकी जी के जीवन आदर्श समेत वह कैसे महिला सशक्तीकरण के लिए ज्वलंत उदाहरण हैं, हर एक विषय की व्याख्या की गई है। वहीं कुछ प्रमुख भारतीय भाषाओं में श्रीरामकथा, अयोध्या के 148 मंदिरों की चर्चा, आने वाली युवा पीढ़ी को प्रभु श्रीराम कथावाचक कैसे बनाया जाए... कई विषयों को विस्तार से संकलित कर अयोध्या में प्रभु श्रीरामजी के मंदिर के संघर्ष की सच्ची गाथा ही नहीं, बल्कि हमारे सनातन को कैसे सबलता प्रदान किया जाए, इसे दृष्टिगत रखते हुए यह ग्रंथ तैयार करने की कोशिश की गई है

क्यों है ऐतिहासिक ?

- 1250 पृष्ठों का है ग्रंथ
- हिन्दी के अलावा भारत के सभी प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं तथा 21 अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद
- 21 देशों में ग्रंथ के विमोचन के साथ संयुक्त राष्ट्र के सभी मान्य देशों में डिजिटल रूप से प्रसार का संकल्प

शुरूआत में इन भाषाओं में अनुवाद:

English, Khmer, Indonesian, Spanish, Guyana, Fijian, Russian, German, Japanese, Korean, Malay, Thai

शुरूआत में इन देशों में प्रसार का संकल्प:

India, Combodia, Indonedia, West Indies, Trinidad & Tobago, Guyana, Fiji, Russia, France, Japan, Korea, Malaysia, Thailand, US, UK, Germany, Spain, Canada, Nepal, Saudi Arabia, Australia, Bangladesh

क्यों खास है पुस्तक का विषय

पुस्तक में अयोध्या की पौराणिक महत्ता से लेकर प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष पर आधारित, कानून, राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक पक्ष के साथ श्रीभगवती सीताजी और प्रभु श्रीराम तथा श्रीरामचरितमानस के मानव कल्याण संदेशों को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ अयोध्या की प्राचीन लोक-संस्कृति, श्रीरामायण और विज्ञान में संबंध, भारतीय भाषाओं में श्रीरामकथा, अयोध्या के दर्जनों मंदिरों की चर्चा समेत कई विषयों को संकलित एवं शोधपरक बनाया गया है।

ग्रंथ- 'श्रीरामलला- मन से मंदिर तक'

काउंसिल ने अयोध्या में प्रभु श्रीरामलला के मंदिर के लिए 500 वर्षों के संघर्ष पर आधारित ग्रंथ ह्यश्रीरामलला- मन से मंदिर तकह्न का लेखन किया है। वर्ष 2018 से इस ग्रंथ पर शोध-कार्य चल रहा था। यह ग्रंथ हिन्दी भाषा में तैयार है तथा अंग्रेजी भाषा में अनुवाद का कार्य चल रहा है। मा. प्रधानमंत्री जी आ. श्री नरेंद्र मोदी जी का विशेष धन्यवाद, जिन्होंने वर्ष 2021 में इस ग्रंथ हेतु अपना मार्गदर्शन प्रदान किया था। यह ग्रंथ 1250 से अधिक पृष्ठों का है तथा हिन्दी के अलावा 10 अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद होना है। ग्रंथ का 21 से अधिक देशों में विमोचन किया जाना है तथा संयुक्त राष्ट्र के कई देशों में डिजिटल रूप से प्रसार होना प्रस्तावित है। ग्रंथ में अयोध्या की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक महत्ता से लेकर मंदिर-संघर्ष के कानूनी, राजनीतिक, सामाजिक... कई सारे पहलुओं को शामिल किया गया है। ग्रंथ में मां सीताजी एवं प्रभु श्रीराम के मानव-कल्याण संदेशों को विस्तार से शामिल किया गया है। इस ग्रंथ में संकलन एवं शोध-कार्यों के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के 250 से अधिक विद्वानों के आलेखों को भी शामिल किया गया है।

दैनिक जागरण

12 June 2025, New Delhi Edition

राम मंदिर के लिए 500 वर्षों का संघर्ष स्मृतियों से ग्रंथ में उतरा

नेमिष हेमंत ● जागरण

- करीब सात साल के शोध के बाद हिंदी में तैयार हुआ 'श्री रामलला मन से मंदिर तक' ग्रंथ
- रामायण रिसर्च काउंसिल ने तैयार किया ग्रंथ, विमोचन मोदी से करवाने का होगा प्रयास

नई दिल्ली : अयोध्या में प्रभु श्रीराम के मंदिर के लिए 500 वर्षों का संघर्ष अब केवल स्मृतियों में नहीं रहेगा, बल्कि एक महत्वपूर्ण ग्रंथ के माध्यम से जन-जन तक पहुंचेगा। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, 'श्री रामलला मन से मंदिर तक' नामक ग्रंथ का निर्माण किया गया है, जो करीब सात वर्षों के शोध और प्रयासों का परिणाम है।

राम मंदिर संघर्ष के सिलसिलेवार विवरण के साथ-साथ आंदोलन से जुड़े प्रमुख संतों के लेखों को भी समाहित करने वाले इस ग्रंथ को दो भागों में विभाजित किया गया है। इसमें 1,250 पृष्ठ हैं। इसका अंग्रेजी में अनुवाद भी चल रहा है। इसे रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा तैयार किया गया है, और इसकी विमोचन की योजना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों से कराने की है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2021 में प्रधानमंत्री ने इस ग्रंथ के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान किया था।

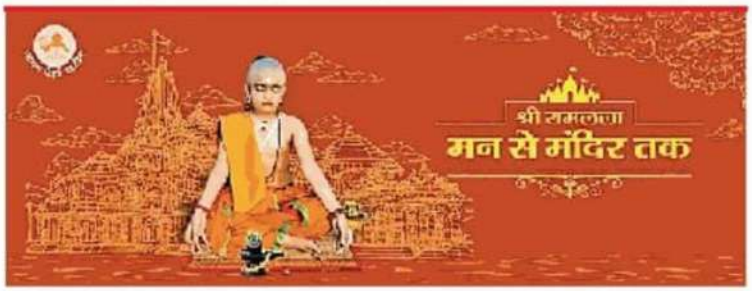

'श्री रामलला मन से मंदिर तक' ग्रंथ का आवरण ● जागरण

राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक निर्णय वर्ष 2019 में आया था, जबकि इस ग्रंथ के लिए शोध कार्य 2018 से आरंभ हुआ था। इसके लिए 27 विशेषज्ञों का एक समूह काम कर रहा था, जो सांस्कृतिक और धार्मिक संघर्ष के साथ-साथ धर्मग्रंथों के जानकार भी माने जाते हैं। ग्रंथ के कलेवर को संविधान की तरह विशेष बनाने पर भी जोर दिया गया है।

रामायण रिसर्च काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि यह 500 वर्ष से अधिक पुराना सांस्कृतिक संघर्ष था, जिसे लोकतांत्रिक माध्यम से सुलझाया गया। इस संघर्ष के कई पड़ाव रहे हैं, जिसमें सामाजिक, राजनीतिक और कानूनी संघर्ष का लंबा इतिहास शामिल है।

अधिक जानकारी के लिए आप
www.ramayanresearchcouncil.com
पर विजिट कर सकते हैं।

Correspondence Address

Shiva Apartment, F-52/53, Gali No. 10, Om Vihar Extn.
Utam Nagar, Delhi. 110059

Web: www.ramayanresearchcouncil.com Email: ramayanresearchcouncil@gmail.com
Mobile: +91 9650349300 | +91 9891169934

/RamayanResearchCouncil /ramayanresearchcouncil /RamayanResearch /RamayanManch